B.A. Part I History Hons

Paper: I, Unit: 03

पाठ: कनिष्क प्रथम की उपलब्धियों का मूल्यांकन

कनिष्क प्रथम कुषाण राजवंश का ही नहीं अपितु प्राचीन भारत का एक महान विजेता, साम्राज्य निर्माता, प्रशासक और कला एवं संस्कृति का उदार संरक्षक था। वह भारत ही नहीं एशिया महाद्वीप का महाप्रतापी सम्राट था। एच. सी. रायचौधुरी के अनुसार कनिष्क भारतीय इतिहास का सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाशाली सम्राट था, जिसमें चन्द्रगुप्त मौर्य के शौर्य और अशोक के धार्मिक उत्साह का सुन्दर समन्वय हुआ था। वास्तव में कनिष्क भारतीय इतिहास का एक अति जाज्वल्यमान नक्षत्र था।

जिस समय पश्चिमोत्तर भारत पर नियंत्रण कायम करने के लिए इण्डो ग्रीक, शक और पह्लव संघर्षरत थे, उसी समय चीन के यू-ची जाति की कुई-शांग अर्थात् कुषाण जनजाति ने चीन की पश्चिमी सीमा से चलकर भारत की सीमा में प्रवेश किया। कुषाणों ने ईसा की प्रथम शताब्दी के प्रारम्भ के साथ पश्चिमोत्तर भारत और पश्चिमी एशिया के कुछ भागों को मिलाकर कुषाण साम्राज्य की स्थापना कर भारतीय आर्थिक एवं संस्कृति में नया अध्याय पैदा किया। इसी कुषाण राजवंश का तीसरा शासक कनिष्क प्रथम था।

कनिष्क के राज्यारोहण की तिथि विवादास्पद है, परन्तु प्राय: यह माना जाता है कि 78 ई० में उसका राज्याभिषेक हुआ और इस अवसर पर शक संवत की शुरुआत की गई, जो आज भी भारत का राष्ट्रीय संवत माना जाता है। कनिष्क अपने पूर्वजों की भांति महत्वाकांक्षी साम्राज्यवादी और शौर्यशाली था। उसने पाटलिपुत्र को पदाक्रान्त कर मगध से विद्वान बौद्ध आचार्य दार्शनिक अश्वघोष को अपनी राजधानी पेशावर ले गया। कनिष्क की स्वर्ण मुद्राएँ पटना, वैशाली, राजगृह, राँची, सुल्तानगंज और बंगाल एवं उड़ीसा में कई स्थानों से मिले हैं, जिनसे यह अनुमान लगाया जाता है कि कनिष्क का आधिपत्य मगध सहित पूर्वी भारत पर था, जिसे उसने अपनी सैन्य शक्ति से कायम की थी। मुद्रा एवं पुरावशेषों की अभिप्राप्ति के आधार पर कनिष्क का प्रभुत्व काशी और प्रयाग पर भी माना जाता है। कनिष्क ने कश्मीर को विजित कर कनिष्कपुर नगर का निर्माण कराया, जो आज भी इसीनाम से जाना जाता है। कनिष्क के साम्राज्य का विस्तार मध्य भारत में साँची तक माना जाता है। पश्चिम भारत में इसका साम्राज्य गुजरात, मालवा और काठियावाड़

REDMI NOTE 8
AI QUAD CAMERA

के क्षेत्रों में फैला हुआ था।

मूल रूप से सम्पूर्ण काबुल घाटी पर उसका प्रत्यक्ष शासन था और सम्पूर्ण गांधार प्रदेश उसके अधीन था, जो उसे विरासत में मिला था। कनिष्क को पंजाब, सिन्ध और राजस्थान पर भी अधिकार था। इस तरह कनिष्क का साम्राज्य सम्पूर्ण पश्चिमोत्तर भारत और उत्तर एवं पूर्व भारत में बंगाल तक फैला हुआ था।

पश्चिमी एशिया में यारकन्द, खोतान और कासगर उसके साम्राज्य के अन्तर्गत था और बैक्ट्रिया का प्रदेश उसे उत्तराधिकार में प्राप्त हुआ था। इस प्रकार कनिष्क भारत का पहला शासक था, जिसने उत्तर भारत, पश्चिमोत्तर भारत, पूर्वोत्तर भारत और मध्य एशिया को मिलाकर एक विशाल कुषाण साम्राज्य का निर्माण किया। उसका साम्राज्य पश्चिम में पार्थिया की सीमा से लेकर चीनी तुर्किस्तान तक और बैक्ट्रिया से लेकर उत्तर भारत में काशी और पाटलिपुत्र तक फैला हुआ था। उसके साम्राज्य की सीमाएं रोमन साम्राज्य की सीमा को छूने लगीं, जिससे व्यापार-वाणिज्य का अत्यधिक विस्तार हुआ।

कनिष्क एक विशाल साम्राज्य का निर्माता और संरक्षक ही नहीं एक सफल संगठनकर्ता था। मौर्य साम्राज्य के विघटन के बाद जिसप्रकार विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई, उसे शकों और पार्थियनों ने तेज किया था, वैसी अवस्था में कनिष्क के लिए किसी केन्द्रीकृत शासन प्रणाली का निर्माण करना संभव नहीं था। उसका साम्राज्य अनेक क्षेत्रों और प्रदेशों में विभाजित था, जिनपर क्षत्रपों और राजाओं का स्थानीय शासन था। ये क्षेत्रीय शासक कनिष्क की अधीनता को स्वीकार करते थे और उसे कर, भेंट, उपहार आदि से सन्तुष्ट रखते थे। स्वयं कनिष्क का प्रत्यक्ष शासन सम्पूर्ण काबुल घाटी, गांधार एवं पश्चिमोत्तर भारत के कुछ भागों के अतिरिक्त बैक्ट्रिया तथा चीनी तुर्किस्तान पर था। पुरुषपुर (पेशावर) उसकी राजधानी थी। उसके शासन प्रबंध के सम्बन्ध में बहुत स्पष्ट जानकारी नहीं मिलती है।

कनिष्क बौद्ध-धर्म, शिक्षा, साहित्य एवं कला का महान संरक्षक था। राजधानी पुरुषपुर के राज दरबार में प्रसिद्ध बौद्ध दार्शनिक अश्वघोष रहते थे। उसने वसुमित्र और नागार्जुन जैसे महान दार्शनिकों को भी संरक्षण प्रदान किया। वसुमित्र ने कनिष्क के द्वारा आयोजित चतुर्थ बौद्ध संगीति की अध्यक्षता की। बौद्ध धर्म दर्शन को इन तीन दार्शनिकों ने अत्यधिक प्रेरित किया। कनिष्क के शासन काल में ही मूर्तिकला की गंधार शैली का चरमोत्कर्ष और मथुरा कला शैली का प्रारम्भ हुआ। बुद्ध ही नहीं बल्कि हिन्दू देवी-देवताओं की इन दो शैलियों की प्रतिमाओं ने भारत में मूर्तिकला के विकास को नया आयाम प्रदान किया। कनिष्क एक महान निर्माता भी था। उसने पुरुषपुर में विशाल विजय स्तम्भ और कश्मीर में कनिष्कपुर नामक

REDMI NOTE 8
AI QUAD CAMERA

नगर का निर्माण करवाया। उसने तक्षशिला, कश्मीर और सारनाथ में बौद्ध स्तूपों और विहारों के निर्माण के द्वारा सम्राट अशोक की महानता को छूने का प्रयास किया। कनिष्क ने अपने पूर्वजों की स्मृति में मंदिरों का भी निर्माण करवाया और इस प्रकार प्राचीन भारत के इतिहास में दर्शन, साहित्य, मूर्तिकला और वास्तुकला के महान संरक्षक एवं प्रकाशक के रूप में सदा के लिए अपना नाम सुरक्षित कर लिया।

कनिष्क के प्रयत्नों से भारत में व्यापार-एवं वाणिज्य का अभूतपूर्व विकास हुआ। उसने भारत में नगरीकरण की गति तेज हुई। कनिष्क को ऐतिहासिक 'रेशम-मार्ग' का उद्घाटक माना जाता था, जो चीन से भारत तथा पश्चिमी एशिया से गुजरते हुए रोम तक जाता था और इस मार्ग पर संचालित व्यापार पर भारतीय व्यापारियों का एकाधिकार था। भारत के आन्तरिक एवं वाह्य व्यापार-वाणिज्य का उत्कर्ष कृषि, उद्योग एवं शिल्प की असाधारण उन्नति का परिचायक था। स्पष्ट है कि कनिष्क ने भारत की आर्थिक प्रगति को उत्तेजना प्रदान किया।

निस्संदेह कनिष्क की महानता प्राचीन भारतीय इतिहास अतुलनीय है, जिसे एक युग-दृष्टा शासक की संज्ञा प्रदान की जा सकती है।

☐ डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक - इतिहास विभाग
डी० बी० कालेज, जयनगर

REDMI NOTE 8
AI QUAD CAMERA